Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में जनसंख्या शिक्षाकी भूमिका

डॉ. आरती शर्मा
सहायकाचार्या, शिक्षाशास्त्रविभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 126-131

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

शोधसार (Abstract)- शिक्षा ज्ञान प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा ज्ञान के प्रसार द्वारा अतीत, वर्तमान और भविष्य के मध्य फैले अंतराल को दूर करती है तथा व्यक्तियों और उनके समूहों को ऐसा ज्ञान, चेतना एवं कौशल प्रदान करती है कि वे वैयक्तिक एवं सामूहिक जीवन-यापन करने योग्य बन सकें तथा सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन में सहभागिता निभा सकें। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है और शिक्षा केवल मनुष्य के लिये होती है ,अन्य प्राणियों के लिए नहीं। प्रारम्भ से ही मनुष्य शिक्षा के माध्यम से समाज और प्रकृति के बारे में ज्ञान प्राप्त करता आया है तथा कार्यकारण की कसौटी पर इस ज्ञान को परखता रहा है। जनसंख्या के आकार-प्रकार के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी मनुष्य सदैव जागरूक रहा है। जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा शताब्दियों पुरानी नही है, इसका उद्भव काल लगभग बीसवीं शताब्दी के मध्यकाल को माना जा सकता है जब मनुष्य, समाज एवं शासन ने बढ़ती आबादी को एक चिन्ता के रूप में देखना शुरू किया तथा इसे नियन्त्रित करने के लिए प्रयास प्रारम्भ किये। वस्तुतः जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या चेतना ही है जो बढ़ती आबादी और इसके दुष्परिणामों को ध्यान में रखकर विकसित होती है। बढ़ती जनसंख्या विकास की दिशा में सबसे बड़ा अवरोध सिद्ध होती है अतएव जनसंख्या और इससे जुड़े मुद्दो के बारे में मानव व्यवहार को तार्किक एवं उत्तरदायी बनाने की आवश्यकता ने ही जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा को जन्म दिया है। यूनेस्को द्वारा भी स्पष्ट प्रतिपादित किया है कि- जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समूह, राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या के सन्दर्भ में विद्यार्थियों में आदर्श एवं जिम्मेदारीपूर्ण अभिव्यक्ति तथा व्यवहार प्रस्तुत करती है। अतः प्रस्तुत पत्र में हम जनसंख्या शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, महत्त्व के विषय में चर्चा करते हुए शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में जनसंख्या शिक्षा की भूमिका एवं जनसंख्या शिक्षा हेतु अध्यापक की भूमिका को प्रतिपादित करने का प्रयास करेंगें।

मुख्यशब्द – शिक्षा, अंग, जनसंख्या, संबंध, समाज, संस्कृति, मनुष्य, अध्यापक, अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना- शिक्षा एवं समाज में गहरा संबंध है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज अपनी परम्परा, संस्कृति एवं ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाता है। शिक्षा देशकाल परिस्थिति एवं आवश्यकता के अनुसार समाज को परिवर्तन एवं नवाचार के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा से यह आशा एवं अपेक्षा की जाती है कि वह व्यक्ति एवं समाज के हित के लिए अपनी भूमिका को निरन्तर उपयोगी एवं प्रासंगिक बनायेगी। समाज के प्रति अपने इस उत्तरदायित्व को निभाकर ही शिक्षा अधिकाधिक संगत एवं सार्थक बन सकती है। शिक्षा अपने व्यापक उद्श्यों के तहत व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं अंततः विश्व से जुड़कर ज्ञान की सर्जना करती है एवं मानव को ज्ञान प्रदान करती है। तथा शिक्षा विभिन्न स्तरों पर व्याप्त समस्याओं को रेखांकित करती है तथा इसके समाधान की दिशाओं से अवगत कराती है। जब शिक्षा को भविष्योन्मुख बनाने की बात कही जाती है तो उसका आशय यही है कि शिक्षा मनुष्य को वर्तमान की समस्याओं एवं भविष्य की आशंकाओं से मुक्त करेगी तथा सुखद एवं समृद्ध जीवन की संभावनाओं को जागृत करेगी।

जनसंख्या विस्फोट ने विश्व समाज और विशेष रूप से तीसरी दुनिया के देशों और विकासशील देशों के लिए संकट खड़ा किया है, इसके परिणामस्वरूप विकास की बढ़ती जटिलताओं एवं निरन्तर प्रदूषित होते पर्यावरण ने मानवता के भविष्य को अंधकारमय बना दिया है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक समझा जा रहा है कि विश्व की नई पीढ़ी को जनसंख्या की विभीषिका से अवगत कराया जाए तथा इस विकराल समस्या के समाधान के लिए उन्हें प्रेरित एवं तत्पर किया जाए। इसी पृष्ठभूमि में जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा का विकास हुआ है। आज विश्व में जनसंख्या शिक्षा का प्रचार-प्रसार गति पकड़ रहा है तथा एक विषय के रूप में इस सुदृढ़ अकादमिक आधार भी प्राप्त हो रहा है। विकास एवं पर्यावरण का मुद्दा जुड़ने के बाद जनसंख्या शिक्षा का अर्थ बहुत व्यापक हो गया है।

जनसंख्या शिक्षा को विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया जा सकता है। यथा-

ब्युर्सन के अनुसार- जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या समस्या से संबधित ज्ञान के प्रति चेतना है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करके शिक्षा जनसंख्या से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान में योगदान दे सकती है।

पो. गोपालराव की दृष्टि में- जनसंख्या शिक्षा को एक ऐसे शैक्षिक कार्यक्रम के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें जनसंख्या समस्या का तथ्यात्मक अध्ययन किया जाता है ताकि विद्यार्थी तीव्र जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समझ सके तथा बौद्धिक आधार पर निर्णय ले सके।

वीडरमैन महोदय के मतानुसार जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक प्रक्रिया है जो मानव को-

- स्वयं के लिए तथा समाज, जिसमें सम्पूर्ण पृथ्वी सम्मिलित है- जनसंख्या सम्बन्धी कारणों एवं परिणामों को समझने में सहायक होती है।
- स्वयं के सम्बन्ध में तथा समाज के सम्बन्ध में जनसंख्या से सम्बन्धित समस्याओं के स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत करती है।

- वर्तमान में तथा भविष्य में व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन स्तर को उन्नत बनाने, जनसंख्या की प्रक्रियाओं को समझने तथा उनका उचित मूल्यांकन करने में सहायक होती है।

जनसंख्या शिक्षा के अभिप्राय में व्यापक सोच एवं दूरगामी दृष्टिकोंण निहित है। यह केवल नई पीढ़ी को जनसंख्या वृद्धि और उसके दुष्परिणामों से ही अवगत नहीं कराती बल्कि भावी अभिभावकों के रूप में उन्हें जनसंख्या से संबधित मुद्दों पर सही समझ, तार्किक अभिवृत्ति, परिपक्व व्यवहार एवं सम्यक् मानक एवं मूल्य की शिक्षा भी प्रदान करती है ताकि वे समाज, देश एवं स्वयं के प्रति दायित्व एवं कर्त्तव्य का निर्वाह कर सकें।

जनसंख्या शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बनाने के लिये इसके क्षेत्र का निर्धारण एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के तत्वावधान में वर्ष 1970 में नई दिल्ली में आयोजित जनसंख्या शिक्षा विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला में जनसंख्या शिक्षा के लिए मुख्य रूप से जिन क्षेत्रों को महत्त्वपूर्ण माना गया उनमें जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या एवं सामाजिक विकास, स्वास्थ्य, पोषण, जैविक कारक एवं पारिवारिक जीवन के बिन्दु शामिल किये गये।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. गोपालराव जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र के निर्धारण में अनेक बिन्दुओं की अनुशंसा करते हैं। उनकी दृष्टि में निम्नलिखित बिन्दुओं को जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए-

1. जनसंख्या वृद्धि का इतिहास।
2. राष्ट्रीय संदर्भो के साथ जनांकिकी का सामान्य परिचय, जनसंख्या वृद्धि, वितरण तथा उसकी संरचना।
3. तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा उसके सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयाम।
4. व्यक्ति तथा परिवार एवं जीवन की गुणवत्ता पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव।
5. भौतिक पर्यावरण, खाद्य एवं प्राकृतिक संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव।
6. प्रजनन व्यवहार से संबंधित सामान्य एवं परिचयात्मक जानकारी।
7. जनसंख्या नीति एवं कार्यक्रम।

जनसंख्या शिक्षा के महत्त्व को निम्नलिखित बिन्दुओं में रखा जा सकता है-

1) बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों से नई पीढ़ी को अवगत कराना।
2) छोटे परिवार के आदर्श को स्वीकार्य बनाने के लिए।
3) जीवन की गुणवत्ता के विकास हेतु।
4) प्रजनन, स्वास्थ्य संवर्द्धन हेतु।
5) निर्णय क्षमता के विकास हेतु।

6) जनसंख्या विकास एवं पर्यावरण में संतुलन का संदेश।

अब मन में प्रश्न उठता है कि शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में जनसंख्या शिक्षा क्यों आवश्यक मानी जा रही है। जनसंख्या शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है? आइए इस बिन्दु पर इस पत्र के माध्यम से कुछ विचार करते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि एक गतिशील, संवेदनशील तथा सुसंगठित राष्ट्र का निर्माण करने के लिए शिक्षा ही लोगों को ज्ञान, चेतना और विश्वास प्रदान करती है। शिक्षा केवल मानव संसाधन के विकास का ही साधन नहीं है बल्कि सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का माध्यम भी है।यह शिक्षा का दायित्व है कि वह जनसंख्या जैसी राष्ट्रीय समस्या के प्रति शिक्षार्थियों एवं समाज का ध्यान आकर्षित करे एवं उसके समाधान का मार्ग प्रशस्त करे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर जनसंख्या शिक्षा को शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में अपनानेएवं शिक्षा के सभी स्तरों पर इसे लागू करने की आवश्यकता प्रतिपादित की जाती है। विद्यालय स्तर पर एक स्वतन्त्र एवं अनिवार्य विषय के रूप में जनसंख्या शिक्षा लागू करने के लिए गम्भीर प्रयास आवश्यक है लेकिन प्रारम्भ में विद्यालयी पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के साथ जनसंख्या शिक्षा से सम्बन्धित पाठों का समाकलन किया जा सकता है। उच्च शिक्षा व अनौपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में जनसंख्या शिक्षा को एक अनिवार्य एवं स्वतन्त्र विषय के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है। जनसंख्या शिक्षा को विशेष रूप से शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के साथ तो अवश्य ही जोड़ा जाना चाहिए ताकि प्रशिक्षण काल में ही शिक्षक इसके महत्त्व से अवगत हो सकें। वर्ष 1968 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित विश्व मानवाधिकार सम्मेलन में कहा गया कि जनसंख्या शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। वर्तमान में जनसंख्या शिक्षा का परिदृश्य एवं परिप्रेक्ष्य दोनों बदल गए हैं एवं इसके क्षेत्र का भी विस्तार हुआ है। अतः जनसंख्या शिक्षा को शिक्षा का अनिवार्य एवं अपरिहार्य अंग बनाना सार्थक सिद्ध हो रहा है।

विश्व के जनांकिकीय विद्वानों ने जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्यों के विषय में अपने विचारों को विस्तार से प्रकट किया है। सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो उनके विचारों में विशेष मतांतर दिखाई नहीं देता। प्रमुख रूप से जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं में अभिव्यक्त किया जा सकता है-

1. जनांकिकी या जनसंख्या विज्ञान के मूलभूत प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों की समझ विकसित करना।
2. जनसंख्या विस्फोट के कारणों एवं कारकों की समझ विकसित करना।
3. जनसंख्या एवं जीवन की गुणवत्ता के पारस्परिक संबंध को समझना तथा व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक विकास के साथ इस संबंध को स्थापित करना।
4. जनसंख्या, विकास एवं पर्यावरण के मध्य संतुलित संबंधों का अर्थ एवं महत्त्व समझना तथा इनके बीच बढ़ते असंतुलन को उजागर करना।

5. व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के सभी स्तरों पर जनसंख्या वृद्धि के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में पड़ने वाले प्रभावों की विवेचना करना एवं इनकी समझ विकसित करना।
6. जनसंख्या के साथ दीर्घकालिक एवं सुरक्षित विकास के संबंधों का ज्ञान प्रदान करना तथा जनसंख्या के साथ विकास का संतुलन, विकास की नीतियाँ, कार्यक्रम, प्रक्रिया आदि की समझ प्रदान करना।
7. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न पर्यावरणीय एवं परिस्थितिकीय प्रभावों को समझना।
8. प्रजनन स्वास्थ्य एवं प्रजनन अधिकार के बारे में सही समझ एवं परिपक्व दृष्टिकोंण विकसित करना तथा इनके साथ जुड़े उत्तरदायित्वों की जानकारी देना।
9. छोटे परिवार के आदर्श को प्रोत्साहित एवं प्रशंसित करना तथा यह समझ विकसित करना कि कम संतान या दो संतान ही आदर्श एवं ग्रहणीय मानक है तथा परिवार का आकार दैवी कृपा या भाग्य से निर्धारित नहीं होता बल्कि यह मानव द्वारा नियन्त्रित एवं नियोजित किया जा सकता है।
10. शिशु और माता के स्वास्थ्य के खतरों को समझना तथा उन्हें यथासम्भव कम करने या समाप्त करने के प्रयासों की जानकारी प्रदान करना। किशोरों, महिलाओं एवं बुजुर्गों की स्थिति को समझना तथा इनकी समस्याओं का समाधान करने की प्रवृत्ति विकसित करना।
11. राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम की रीति-नीति को समझना।
12. राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर लागू जनसंख्या नीति के प्रति चेतना विकसित करना तथा इनसे संबंधित कार्यक्रमों एवं कार्यान्वयन तंत्र के बारे में जानकारी एवं जागरुकता का प्रसार करना।
13. छात्र-छात्राओं में देश की जनसंख्या नीति तथा जनसंख्या नियन्त्रण सम्बन्धी विभिन्न योजनाओं की जानकारी देना।
14. छात्र-छात्राओं में जनसंख्या वृद्धि की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से समझने की योग्यता विकसित करना।
15. छात्र-छात्राओं में परिवार के आकार तथा जीवन स्तर के बीच के सम्बन्ध को समझने की योग्यता विकसित करना।
16. पर्यावरण पर जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभावों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराना।
17. छात्र-छात्राओं को जनसंख्या वृद्धि की प्रक्रिया व उसके कारणों का ज्ञान प्रदान करना।

जनसंख्या शिक्षा में अध्यापक की भूमिका-

निःसन्देह जनसंख्या शिक्षा अत्यधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के इस प्रकार में शिक्षक द्वारा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी जाती है। शिक्षक को जनसंख्या शिक्षा की समुचित जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। उसका दायित्त्व है कि वह अपने छात्र-छात्राओं तथा समाज के व्यक्तियों को जनसंख्या सम्बन्धी विस्तृत जानकारी प्रदान करे। शिक्षक का दायित्व है कि वह छात्रों को जनसंख्या वृद्धि से

उत्पन्न समस्याओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करे तथा जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने की आवश्यकता तथा उपायों की भी जानकारी प्रदान करे। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा के पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा को अवश्य सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस स्थिति में शिक्षक अपने दायित्त्व को भलीभाँति निभा सकेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. शर्मा, डॉ. आर.ए., जनसंख्या शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. सिंह, डॉ. सदन, जनसंख्या शिक्षा (2013), अभिषेक प्रकाशन,नई दिल्ली।
3. मलैया, डॉ. के.सी, शर्मा, डॉ. रमा, जनसंख्या शिक्षा (2014), श्री विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा।
4. टाक, डॉ. ओमप्रकाश, जनसंख्या एवं विकास शिक्षा (2012), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. द्विवेदी, जया, शर्मा, अञ्जू, जनसंख्या शिक्षा एवं पर्यावरण शिक्षा (2016), Rakhi Prakashan, Agra
6. चन्देल, डॉ. नरेन्द्र पाल सिंह, नन्द, डॉ. विजय कुमार, जनसंख्या शिक्षा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. Pandey, V.c, Population Education (2005)Isha Book Publisher,Haryana.
8. Singh, U.K., Sudershan, K.N., Population Education, Discovery publishing Pvt.Ltd., Delhi.
9. Udaiveer, Modern Teaching of population Education, Anmol publication, Pvt.Ltd., Delhi.
10. Sharma, Rampratap, Population Education in India (2013), Kaniska publication, New Delhi.